

## SHRI ARVIND KUMAR GUPTA

Shri Arvind Kumar Gupta is a well-known Indian science popularizer and educator. He has conducted lecture-demonstrations and workshops in over 3000 schools throughout India.

2. Born on December 4, 1953, Shri Gupta received his Bachelor of Technology degree from the Indian Institute of Technology, Kanpur in 1975. During his student days, he was inspired by socialist ideals. He began his journey by teaching the children of mess staff at the institute who had no opportunities for formal education.

3. On graduating, he worked for a few years with Tata Motors in Pune. In 1978, he participated in the Hoshangabad Science Teaching Programme, considered to be India's most progressive experiment in science education. The experience at Hoshangabad prompted him to create simple toys and science experiments using low-cost, locally available materials and throwaway trash. His first book, Matchstick Models and other Science Experiments was reprinted in 12 languages. In 1978, he spent four months with the famous Gandhian architect Laurie Baker in Trivandrum.

4. From 2003-2011, Shri Gupta worked at the Children's Science Centre of the Inter-University Centre for Astronomy & Astrophysics (IUCAA), Pune. He and his team continued to devise new toys and teaching materials. The process of making these was uploaded on the internet in the form of photographs and videos. Today, Shri Gupta's website (www.arvindguptatoys.com) documents over 1500 toys through photographs and instructions, while his YouTube channel contains 8600 short video clips in 18 languages, freely available without copyright restrictions, and have a viewership of over 63 million. His science models and toys have also been widely featured in daily newspapers and magazines across the country. In his career spanning four decades, Shri Gupta has written 25 books on science. He has also translated over 380 books into Hindi, spreading the message of peace, rational enquiry and scientific temper among children. He has presented over 125 TV programmes on science-based fun activities on Doordarshan (Tarang) and other popular TV shows.

5. Shri Gupta has received several awards for his outstanding contributions. These include the inaugural National Award for Science Popularisation amongst Children (1988); Hari Bhau Mote Award of the Marathi Vigyan Parishad (1988); the National Association for the Blind Award for designing teaching aids for pre-school blind children (1991); the Granthali award for his book Khel (1992); the Ruchi Ram Sahni Award for science popularization (1993); the Hari Om Ashram Award by the UGC (1995); the Distinguished Alumnus Award of IIT Kanpur (2000); the Mary McCurdy Award of CESI (2001); the Prof. G.D. Parikh Memorial Award (2004); the Prashant Padhye Award (2005); the Harmony Silver Award (2007); the Indira Gandhi Award for Science Popularization (2008); the One India, One People Award (2009); the Prof T. Navaneeth Rao Best Teacher's Award (2010); the Third World Academy of Sciences Award (2010); the Sri Chandrasekarendra Saraswati National Eminence Award (2011); the C.N.R. Rao Education Foundation Prize for Outstanding Science Teacher (2011); the Dadhichi Award (2013); the IBN-Lokmat Prerna Award (2014); the Distinguished Math Teacher's Award by AMTI (2016); and the Dr. Narendra Dabholkar Memorial Award by the Maharashtra Foundation (2018).



# श्री अरविन्द कुमार गुप्ता

श्री अरविन्द कुमार गुप्ता एक सुप्रसिद्ध भारतीय विज्ञान प्रचारक एवं शिक्षक हैं। आपने संपूर्ण भारत में 3000 से भी अधिक विद्यालयों में भाषण-प्रदर्शन तथा कार्यशालाओं का आयोजन किया है।

2. आपका जन्म 4 दिसम्बर, 1953 को हुआ। आपने वर्ष 1975 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर से बैचलर ऑफ टेक्नॉलोजी की डिग्री प्राप्त की। अपने विद्यार्थी जीवन के दौरान आप समाजवादी विचारों से अत्यंत प्रभावित हुए। आपने अपने शिक्षक जीवन की शुरूआत संस्थान में मेस स्टाफ के उन बच्चों को शिक्षित करने से की जिन्हें औपचारिक शिक्षा का अवसर ही प्राप्त नहीं हुआ था।

3. स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के उपरांत, आपने कुछ वर्ष पुणे में टाटा मोटर्स में कार्य किया। वर्ष 1978 में आपने विज्ञान की शिक्षा में भारत का सर्वाधिक प्रगामी अनुभव माने जाने वाले होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। होशंगाबाद में प्राप्त हुए अनुभव की वजह से आपको कम लगात वाली, स्थानीय रूप से उपलब्ध एवं बेकार सामग्री का प्रयोग करके साधारण खिलौने एवं विज्ञान संबंधी प्रयोग करने की प्रेरणा प्राप्त हुई। आपकी प्रथम पुस्तक: माचिस की तीलियों से बने मॉडल तथा विज्ञान के अन्य प्रयोगों को 12 भाषाओं में पुन: मुद्रित किया गया। वर्ष 1978 में आपको त्रिवेंद्रम में सुप्रसिद्ध गांधीवादी वास्तुकार लॉरी बेकर के साथ चार माह का समय बिताने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

4. वर्ष 2003-2011 के दौरान आपको इंटर-यूनिवर्सिटी सेंटर फॉर एस्ट्रोनोमी एंड एस्ट्रोफिजीक्स (आई यू सी ए ए), पुणे के बाल-विज्ञान केन्द्र में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। आपने अपने सहयोगी दल के साथ मिलकर नए खिलौनों तथा शिक्षण सामग्री का सृजन करना जारी रखा। इन खिलौनों तथा शिक्षण सामग्री के सृजन की प्रक्रिया को फोटो तथा वीडियो के रूप में इंटरनेट पर अपलोड कर दिया गया। आपकी वेबसाइट पर फोटोग्राफ तथा अनुदेशों के माध्यम से 1500 से अधिक खिलौनों की रचना की प्रक्रिया को दर्शाया गया है, जबकि आपके यू-टयूब चैनल पर कॉपीराइट्स के प्रतिबंध के बिना 18 भाषाओं में 8600 लघु वीडियो क्लिप्स उपलब्ध हैं तथा इन्हें 63 मिलियन से भी अधिक लोगों द्वारा देखा जाता है। आपके विज्ञान संबंधी मॉडलों एवं खिलौनों को देशभर के दैनिक समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं में भी व्यापक रूप से प्रदर्शित किया गया है। चार दशकों के अपने कैरियर में आपने विज्ञान विषय से संबंधित '25 पुस्तकों को लेखनीबद्ध किया है। आपने बच्चों के बीच शांति, यौक्तिक पृच्छा एवं वैज्ञानिक अभिवृत्ति के संदेश का प्रसार करते हुए 380 से अधिक पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद किया। आपको दूरदर्शन (तरंग) तथा अन्य प्रसिद्ध टी. वी. शो में विज्ञान पर आधारित मौज-मस्तीपूर्ण गतिविधियों संबंधी 125 टी. वी. कार्यक्रम प्रस्तुत करने का श्रेय प्राप्त है।

5. आपको आपके अतुलनीय योगदान के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इनमें बच्चों के बीच विज्ञान का प्रचार-प्रसार करने के लिए इनॉग्रल नेशनल अवार्ड (1988); मराठी विज्ञान प्री स्कूल के नेत्रहीन बच्चों के लिए शिक्षण सहायक सामग्री तैयार करने के लिए नेशनल एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड अवार्ड (1991); आपकी पुस्तक खेल के लिए ग्रंथाली पुरस्कार (1992); रुचि राम साहनी अवार्ड फॉर साइंस पोपुलराइजेशन (1993); विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त हरिओम आश्रम अवार्ड; आई आई टी कानपुर का डिस्टिंग्विश्ड एल्यूमिनस अवार्ड (2000); प्रोफेसर जी. डी पारिख मैमोरियल पुरस्कार (2004); प्रशांत पांडे पुरस्कार (2005); वन इंडिया वन पीपल अवार्ड (2009); प्रोफेसर टी. नवीनथ रॉव बेस्ट टीचर अवार्ड (2010); श्री चंद्रशेरेन्द्र सरस्वती नेशनल एमीनेंस अवार्ड (2011); सी एन आर रॉव एजुकेशन फाउंडेशन प्राइज फॉर आउटस्टैंडिंग साइंस टीचर (2011); दधीचि पुरस्कार (2013); आई वी एन -लोकमत प्रेरणा पुरस्कार (2014); ए एम टी आई द्वारा दिया गया डिस्टिंग्विश्ड मैथ टीचर अवार्ड (2016); तथा महाराष्ट्र फाउंडेशन द्वारा प्रदान किया जाने वाला डॉ. नरेन्द्र दाभोलकर मैमोरियल अवार्ड (2018) शामिल है।